

छत्तीसगढ़ शासन

सत्यमेव जयते

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

उरांव जनजाति में करमा उत्सव का मोनोग्राफ अध्ययन

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

शासकीय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन क्रमांक : 09

Chhattisgarh TRTI
TRIBAL RESEARCH AND TRAINING INSTITUTE

उरांव जनजाति में करमा उत्सव

निर्देशन
शम्मी आबिदी (आई.ए.एस.)
संचालक

मार्गदर्शन
डी. पी. नागेश
उप संचालक

संकलन एवं लेखन कार्य
श्रीकांत कसेर (सहायक संचालक)
निलेश कुमार सोनी (अनुसंधान सहायक)
जी.एल. बलेन्दर (अनुसंधान सहायक)

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

अनुक्रमणिका

अध्याय - एक
प्रस्तावना



आदिकाल से ही भारत वर्ष में त्यौहारों का महत्व रहा है। नाना प्रकार के त्यौहार से समाज की धार्मिक मान्यताओं का भी पता चलता है। ये त्यौहार यू ही नहीं मनाये जाते बल्कि इनके पीछे भी पौराणिक कथाओं की महत्ता रही है। एक समय था जब ये जीवन का एक हिस्सा होते थे और मनोरंजन के साधन भी, किन्तु आज स्थिति भिन्न प्रतीत होती है। क्योंकि ढकोसलों, बाह्य आडम्बरों ने इन्हें प्रभावित किया है। मानवजाति की मानसिकता में भी परिवर्तन आये हैं, और आस्था भी अर्थ प्रधान होती दिखाई देती है। इसके बाद भी आज त्यौहारों का हमारे जीवन में महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

त्यौहार का शाब्दिक अर्थ, वह दिन जब कोई धार्मिक अथवा जातीय उत्सव मनाया जाये। इसके लिये पर्व शब्द का भी प्रयोग होता है। पर्व शब्द का सम्बंध शुभ मुहुर्त, लग्न अथवा क्षणों के योग से है। एकादशी, चतुर्दशी, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि पर्व कहे गये हैं। ऐसे अवसरों पर नदी स्नान, उपवास, पूजा आदि किये जाते हैं। उत्सव शब्द का अर्थ है ''**आनन्द का अतिरेक (अधिक्य)**'' इस समय सामुहिक आनन्द का अतिरेक देखा जाता है। अब तीज शब्द भी त्यौहार का घोतक बन गया है।

भारत वर्ष त्यौहारों का देश कहा जाता है। इसके पीछे दार्शनिक कारण छुपा हुआ है। असल में मानव दुखः अधिक पालता है, और सुख के क्षणों को शीघ्र ही भूल जाता है। जब त्यौहार आते हैं, तो मानव के जीवन में सुख के क्षण आते है, वह इस समय सारे दुखों को भूलाकर आनन्द की ओर उन्मुख होता है, जिसके कारण उसके जीवन में सुख और प्रसन्नता का वातावरण आता है। अतः इस वातावरण को उनके जीवन में बारम्बार लाने के लिये ही अनेक त्यौहारों की अवधारणा विकसित की गयी है। सभी त्यौहार मानव जीवन से संबंधित है, और हमारे जीवन में इनका सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक महत्व रहा है।

इन त्यौहारों को हम निम्न वर्गो में विभक्त कर सकते है :–

1. **धार्मिक त्यौहार** :- शिवरात्रि, जन्माष्ठमी, दीपावली, दशहरा, ईद, बकरीद आदि।
2. **सांस्कृतिक त्यौहार** :- बसंत पंचमी, रक्षाबंधन, होली, भाई दूज आदि।
3. **राष्ट्रीय त्यौहार** :- स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, एकता दिवस आदि।
4. **यादगार त्यौहार** :- गांधी पुण्य तिथि, नेहरू जयंती आदि।
5. **उरांव जनजाति के लोक पर्व** :- करमा, हरेली, सरहुल, कठोरी, ढोल, खद्दी, आषाढ़ी (टुन्टा), सोहराई, कदरेला, नवाखाई, जेठवारी एवं दशई आदि।

ये सभी त्यौहार हमारे जीवन का अंग है। ये न केवल हमें प्रेरित करते हैं बल्कि हमे हमारे कर्तव्यों को याद भी दिलाते हैं। हमें विभिन्न प्रकार की शिक्षा देते हैं। साथ ही हमें सुख प्रदान करते हैं। जो हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन को एक दिशा प्रदान करते हैं। इनका एक बहुत बड़ा संदेश भाईचारा ही है। इनका संदेश खुश होने से है, खुशियां बांटने से है, मिलकर खुशी मनाने से है।

सरगुजा अंचल में निवासरत कुडुख उरांव जनजाति का प्रमुख लोक पर्व करमा है। इसका सम्बंध कृषि और पर्यावरण से है। सरगुजा अंचल की जनजातियों का लोक जीवन मूल रूप से कृषि और वन पर आधारित है। कृषक समाज लोक पर्वो के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करता है। यहॉ के स्थानीय पर्व करमा, छेरता, गंगा दशहरा, कठोरी, हरेली, तीजा, नवाखाई, जीवितिया आदि है। इसमें से करमा पर्व मध्यवर्ती भारत की जनजातियों द्वारा मनाये जाने वाले सर्वाधिक लोक प्रिय लोक पर्वो में से एक है। इस पर्व में करमा व्रत, करमा गीत, करमा नृत्य एवं करमा त्यौहार से सम्बंधित अनेक प्रकार की दंत (लोक) कथाओं का मिश्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अध्याय - दो
अध्ययन क्षेत्र एवं प्राविधि



छत्तीसगढ़ संक्षिप्त परिचय :-

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। यह मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में 17 ॰46 उत्तरी अक्षांश से 24 ॰5 उत्तरी अक्षांश तथा 80.15 पूर्वी देशांतर से 84.20 पूर्वी देशांतर रेखाओं के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 135191 वर्ग किलोमीटर है यह भारत के कुल क्षेत्रफल का 4.11 प्रतिशत है।

1 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आए भारत का 26 वें नवोदित राज्य छ.ग. में मूलतः 16 जिले थे। वर्तमान समय में राज्य में जिलों की कुल संख्या 28 है। राज्य के ये 28 जिले 5 संभागों (बस्तर, बिलासपुर, सरगुजा, रायपुर एवं दुर्ग) के अंतर्गत आते है।

छ.ग. के भौगोलिक विस्तार में अनेक असमानताएं विद्यमान है। इसके उत्तरी भाग में कोरिया, सरगुजा, तथा जशपुर जिलों में पर्वतमालाओं एवं पठार का विस्तार है। मैकाल पर्वत श्रेणी कवर्धा जिले में दक्षिण–पूर्व तक विस्तृत है। पूर्वी भाग में सत्ती पर्वत लगभग महानदी कछार तक फैला है। रायगढ़ जिला महानदी के उपरी कछार और पूर्वी सीमा पर पहाड़ी मैदान में विभक्त है। दुर्ग और राजनांदगांवमैदानी और मैकल श्रेणी में विभक्त है। बस्तर का अधिकांश भाग पठारी है।

जनसंख्या :- छ.ग. राज्य की जनसंख्या 2011 के जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2,55,45,198 है। जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 1,28,32,895 एवं महिलाओं की जनसंख्या 1,27,12,303 है।

जनसंख्या घनत्व :- छ.ग. राज्य की जनसंख्या घनत्व सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 189 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी है।

जनसंख्या वृद्धि दर :- छ.ग. राज्य की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर जनगणना 2011 के अनुसार (2001–2011) 22.6 प्रतिशत है।

लिंगानुपात :- लिंगानुपात महिलाओं एवं पुरूषों के पारस्परिक अनुपात को प्रदर्शित करता है, सन् 2011 की जनगणना के आकड़ों के अनुसार राज्य में प्रति 1000 पुरूषों पर 991 महिलाएं है।

साक्षरता :- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार छ.ग. की सम्पूर्ण साक्षरता 70.3 प्रतिशत है। राज्य में पुरूषों की साक्षरता 80.3 प्रतिशत तथा महिलाओं की साक्षरता प्रतिशत 60.2 प्रतिशत है।

नगरीकरण :- नगरीकरण से तात्पर्य कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात से है। छ.ग. की जनसंख्या ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में वितरित है। 2011 जनगणना के अनुसार राज्य की कुल नगरीय जनसंख्या 5,93,7,237 है। यह कुल

जनसंख्या का 23.2 प्रतिशत है।

छत्तीसगढ़ अनुसूचित जनजातियां :- ऐसे जनजातियां जिन्हे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत सूचीबद्ध किया जाता है अनुसूचित जनजाति कहलाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत राष्ट्रपति को अधिकार है किवह किसी जनजाति समूह को अनुसूचित जनजाति घोषित कर सकते है। छ.ग. में अनुसूचित जनजातियों समूह की संख्या 42 है सन् 2011 की जनगणना के अनुसार छ.ग. राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 7,82,2,902 है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का लगभग एक–तिहाई है। सभी जिलों में अनुसूचित जनजातियों की आबादी पायी जाती है। लेकिन प्रदेश के सभी जिलों में इन जातियों का वितरण समान रूप से नहीं है। ये जनजातियां आमतौर पर पहाड़ी तथा वनाच्छादित क्षेत्रों में अधिक रहते है।

तालिका : जिलेवार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (2011)

क्र.	जिला	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला	अनु.ज.जा. प्रतिशत
1	सरगुजा	1300628	652799	647829	55.11%
2	बस्तर	931780	456841	474939	65.93%
3	जशपुर	530378	262731	267647	62.28%
4	रायगढ़	505609	250473	255136	33.84%
5	बिलासपुर	498469	248172	250297	18.71%
6	कोरबा	493559	246323	247236	40.90%
7	रायपुर	476446	235271	241175	11.72%
8	कांकेर	414770	203934	210836	55.38%
9	दन्तेवाड़ा	410255	199731	210524	76.88%
10	राजनांदगांव	405194	198032	207162	26.36%
11	दुर्ग	397416	196008	201408	11.88%
12	कोरिया	304280	152659	151621	46.18%
13	महासमुंद	279896	137339	142557	27.10%
14	धमतरी	207633	102058	105575	25.96%
15	बीजापुर	204189	101519	102670	80.00%
16	जांजगीर–चांपा	187196	93186	94010	11.56%
17	कवर्धा	167043	82597	84446	20.31%
18	नारायणपुर	108161	53518	54643	77.36%
	योग	**7822902**	**3873191**	**3949711**	**30.60%**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि **जनगणना 2011** के अनुसार राज्य में अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक आबादी सरगुजा जिलें में तथा सबसे कम आबादी नारायणपुर जिलें में है।

उपरोक्त सारणी से यह भी स्पष्ट है कि एक ओर जहां बीजापुर जिलें की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का हिस्सा 80.00 प्रतिशत है वहीं जांजगीर–चांपा जिले में यह मात्र 11.56 प्रतिशत ही है। राज्य के 7 जिलों – दन्तेवाड़ा, बस्तर, जशपुर, कांकेर, सरगुजा, बीजापुर एवं नारायणपुर में आधी से अधिक आबादी अनुसूचित जनजातियों की है।

जनजातियों का संकेन्द्रण :- छत्तीसगढ़ राज्य में जनजातियों के संकेन्द्रण को तीन भागों में बांटा जा सकता है :–

1. **उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र** - इसमें कोरिया, सरगुजा, सूरजपुर, बलरामपुर, जशपुर, रायगढ़, कोरबा, बिलासपुर मुंगेली तथा जांजगीर चांपा जिलों को शामिल किया जाता है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियां– गोड़, कंवर, नगेसिया, पण्डो, कोरवा, बिरहोर, उरांव, खैरवार, बिझंवार, कोडार तथा भैना है।
2. **मध्यवर्ती भाग** - इस क्षेत्र में रायपुर, गरियाबंद, बलौदाबाजार, महासमुंद, दुर्ग, बालोद, बेमेतरा, राजनांदगांव, कवर्धा जिले है यह क्षेत्र कमार, हल्बा, भतरा, सोता, सोनता तथा बिझंवार आदि जनजातियों का निवास क्षेत्र है।
3. **दक्षिणी क्षेत्र** - दक्षिणी क्षेत्र में बस्तर, कोण्डागांव, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा तथा कांकेर जिले शामिल है इस क्षेत्र में गोड़, मारिया, मुडिया, हल्बा, अबुझमाड़िया, परजा, गदबा तथा भतरा आदि जनजातियां पाई जाती है।

प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियां :- छत्तीसगढ़ राज्य में 5 विशेष पिछड़ी जनजातियां निवास करती है जो निम्नानुसार है :–

1.	बैगा	:	कवर्धा, बिलासपुर, मुंगेली, कोरिया, राजनांदगांव, गौरेला–पेण्ड्रा–मरवाही
2.	पहाड़ी कोरवा	:	कोरबा, सरगुजा, बलरामपुर, रायगढ़ एवं जशपुर
3.	बिरहोर	:	जशपुर, रायगढ़
4.	अबुझमाड़िया	:	नारायणपुर
5	कमार	:	गरियाबंद, धमतरी, महासमुंद, कांकेर, बलौदाबाजार

जिला बलरामपुर की संक्षिप्त परिचय :-

बलरामपुर जिला छत्तीसगढ़ के 28 जिलों में से एक जिला है। बलरामपुर सरगुजा मण्डल का जिला है। इसका मुख्यालय बलरामपुर है। जिले में 3 उपमण्डल, 6 तहसीले है। एक लोकसभा क्षेत्र व 3 विधानसभा क्षेत्र है। 630 ग्राम और 365 ग्राम पंचायते है।

बलरामपुर जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 3806 वर्ग किलोमीटर है, और 2011 की जनगणना के अनुसार बलरामपुर की जनसंख्या 730491 और जनसंख्या घनत्व 230 किमी. व्यक्ति (प्रतिवर्ग किलो मीटर) है। बलरामपुर की साक्षरता 54.16 प्रतिशत है। महिला पुरूष अनुपात यहां पर 973 महिलायें प्रति 1000 पुरूषों पर है। जिले की जनसंख्या विकास दर 2001–2011 के बीच में 1.9 प्रतिशत रहा हैं।

बलरामपुर–रामानुजगंज की सीमाएं उत्तरप्रदेश, झारखण्ड और मध्यप्रदेश के साथ साझा करता है और लगभग 60.16 लाख हैंक्टेयर के कुल भूमि क्षेत्र मे फैला हुआ है। पहाड़ी और घने जंगली इलाकों में विस्तृत पर्वत श्रेणियां जिले के एक बडे हिस्से को कवर करता है। धान, मक्का, मुंगफली, गेंहू और चना भी जिले के कुछ सिंचाई वाले भागों में ले रहे है। जबकि किसानों द्वारा धान व मक्का का फसल ले रहे हैं।

बलरामपुर जिले की जलवायु उत्तरी पहाड़ियों कृषि जलवायु क्षेत्र का एक हिस्सा है। मौसम के दौरान गर्म और अच्छी तरह से वितरित वर्षा (औसत 125 सेमी.)यहां की विशेषताएं है। बलरामपुर जिला रामनुजगंज जिला पूर्णतः अनुसूचित क्षेत्र जिला है। यहां लगभग 63 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या है। जबकि अनुसूचित जाति, कुल जनसंख्या का सिर्फ 4.5 प्रतिशत के समावेश के साथ एक आदिवासी प्रधान जिला हैं, पहाड़ी कोरवा, गोंड, खैरवार, कवंर, नगेसिया, पण्डो एवं उरांव जिले में रहने वाले प्रमुख आदिवासी समूह है। परम्परागत लोगों द्वारा आदिवासी विश्वासों और प्रथाओं का अनुसरण किया जा रहा है। (जैसे कर्मा, सैला, सरहूल एवं सरना प्रमुख नृत्य है। आदिवासी त्यौहारों जैसे–दीवाली, होली, दशहरा है जिले के एक बड़े आबादी बहुमत से मकर संक्राति त्यौहार मनाया जाता है। तातापानी महोत्सव पर्यटकों का मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा है।

उद्देश्य :-

छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत उरांव जनजाति की लोक पर्व, करमा त्यौहार (उत्सव) का मोनोग्राफ अध्ययन करना।

महत्व :-

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत उरांव जनजाति की लोक पर्व करमा त्यौहार को जानने में सहायक सिद्ध होगी।

अध्ययन प्रविधि :-

छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत उरांव जनजाति के लोकपर्व करमा त्यौहार (उत्सव) का उरांव समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, परम्पराओं, रीति–रिवाज, लोक परम्पराओं आदि की जानकारी रखने वाले श्री बसंत कुजूर पिता स्व. मानकु कुजूर (सर्व आदिवासी समाज अध्यक्ष जिला–बलरामपुर) पता ग्राम कटिमा तहसील सामरी कुसमी जिला बलरामपुर छ.ग. से मुलाकात कर उरांव जनजाति के करमा लोक उत्सव के संबंध में विस्तृत परिचर्चा एवं जानकारी संकलन कर अध्ययन प्रतिवेदन तैयार किया गया है।

–·–·–·–·–·–·

अध्याय - तीन
उरांव जनजाति का परिचय

भारतीय समाज में अनेक ऐसे मानक समूह है जो बाह्य सभ्यता से सम्पर्क के पश्चात भी अपनी मौलिक सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाए हुए है, ये शहरी सभ्यता से बहुत दूर घने जंगलो, पर्वतो, घाटियों एवं पठारी क्षेत्रों में निवास करते हैं। सामान्यतः लोग इन्हें पिछड़े हुए और असभ्य मानव समुह समझते है। जो एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुए एक समान्य भाषा–बोली बोलते है, और सामान्य संस्कृति को प्रयोग में लाते है। इन्ही समुदायों को आदिवासी, वनवासी, आदिम जाति, जनजाति, वन्य जाति के रूप में जाना जाता है। इनकी आर्थिक, सामाजिक शैक्षणिक तथा स्वास्थ्य संबंधी स्थिति अन्य समाजों की तुलना में पिछड़ी हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात इन्हें समाज की मुख्यधारा के समकक्ष लाने के लिए भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति का नाम देकर अनुच्छेद 342 के तहत भारत सरकार द्वारा अलग–अलग राज्यों के अनुसूचित जनजाति समुह की सूची जारी की गई है। तथा इनके सामाजिक आर्थिक, शैक्षणिक विकास तथा इनके हितों के संरक्षण हेतु भारतीय संविधान में अनके प्रावधान किये गये हैं।

छ.ग. के अनुसूचित जनजाति की सूची में अनुक्रमांक 33 पर उल्लेखित उरांव जनजाति छ.ग. की एक प्रमुख जनजाति है। यह जनजाति कुडुख भी कहलाती है। ये प्रोटो–आस्ट्रोलायड प्रजाति लक्षण के जनजाति है। इनका रंग सांवला हाथ पैर गठिले, चेहरा, फैला हुआ, नाक दबा, बाल घुंघराले व काले, मुछ और दाढ़ी कम शरीर बलिष्ठ होता है। ये आपस में संवाद के लिए जातीय बोली कुडुख, स्थानीय बोली सादरी, सरगुजिहा, जशपुरिहा, छत्तीसगढ़ी तथा हिन्दी भाषा का उपयोग करते है। छ.ग. राज्य में इनकी जनसंख्या (जनगणना 2011) 748789 दर्शित है, इसमें पुरूष 373065 तथा स्त्रियां 375824 है। इनकी साक्षरता प्रतिशत (जनगणना 2011) 68.9 प्रतिशत है पुरूष की साक्षरता प्रतिशत 76.6 प्रतिशत तथा स्त्रियों की 61.4 प्रतिशत है।

1. उत्पत्ति एवं निवास :-

उरांव जनजाति की उत्पति के विषय में ऐतिहासिक अभिलेख नहीं है। समाज वैज्ञानिकों के अनुसार उरांव देश के पश्चिमी और उत्तर भागों में हजारों वर्ष पहले रहा करते थे। कालांतर में उनके पूर्वज शाहबाद (भोजपुर) क्षेत्र में प्रवेश किये। आर्यो के दबाव के कारण उन्हें शाहबाद छोड़ना पड़ा। कुछ समय तक उरांव रोहताश के पठारी इलाको में आश्रम लिए फिर छोटा नागपुर की ओर बढ़े। रोहताश छोड़ते वक्त वे दलों में बट गये । एक दल गंगा की तटवर्ती इलाके से गुजरता हुआ राजमहल के पहाड़ी इलाकों में पहुंचा। दूसरा दल कोयल नदी की तटवर्ती मैदानों से होता हुआ पलामू (बिहार) क्षेत्र में प्रवेश किया। पलामू के बाद वे उत्तर–पूर्वी रांची में प्रवेश किया। छोटा नागपुर से कुछ लोग छत्तीसगढ़ के जशपुर, बलरामपुर, सरगुजा के पहाड़ी क्षेत्रों में आकर बस गये।

2. निवास :-

छ.ग. राज्य में इनका प्रमूख निवास राज्य की उत्तर–पूर्वी सीमा–जशपुर, रायगढ़ सरगुजा कोरिया, सूरजपुर बलरामपुर जिला है। समस्त उरांव क्षेत्र पर्वतों की मनोरम घाटियों तथा हरे भरे साल वनो से अच्छादित है। राज्य में जशपुर जिले में उरांव की जनसंख्या सबसे अधिक है।

3. भौतिक संस्कृति :-

उरांव जनजाति के लोग मुण्डा, नगेशिया, गोड़, कंवर, खैरवार, भूमिहार आदि जनजातियों के साथ ग्राम में निवास करते हैं। इनके घर मिट्‌टी के बने होते हैं। जिस पर लकड़ी और देशी खपरैल से छप्पर बनाते हैं। घर की दीवार की पुताई हिन्दु उरांव काली मिट्‌टी से तथा इसाई उरांव चूने से करते हैं। घर का फर्श मिट्‌टी का बना होता है, जिसे प्रतिदिन गोबर, मिट्‌टी से लीपते हैं। घर में दो–तीन कमरा होते है, चारो तरफ बरामदा नुमा ''परछी'' होती है। मुख्य बड़े कमरे में अनाज रखने की कोठी, देवी–देवता का स्थान होता है। रसोई घर परछी में होता है। इनके घर में मुख्यतः मिट्‌टी, एल्युमिनियम, कांसे व स्टील के कुछ बर्तन, चुल्हा, ढेकी, मूसल, चक्की, ओढ़ने बिछाने, पहनने के कपड़े, वाद्‌ययंत्र में मांदर (मिट्‌टी का मृदंग) कृषि के उपकरण, मछली पकड़ने के जाल आदि होते हैं।

4. व्यक्तिगत स्वच्छता :-

उरांव पुरूष व महिलाएं प्रतिदिन करंज, नीम, हर्रा, साल आदि की दातुन से दांतो की सफाई कर स्नान करते हैं। पुरूष बाल छोटे रखते हैं। स्त्रियां लम्बे बालो का जूड़ा या बेनी बनाती हैं। बाल धोने के लिए काली मिट्‌टी या साबुन का उपयोग करते हैं

5. वस्त्र विन्यास :-

उरांव जनजाति की पुरूष छोटी धोती व अंगरखा पहनते हैं। महिलाएं लुगड़ा–पोलका पहनती हैं, नवयुवक पेंट, शर्ट, नवयुवतियॉ साड़ी, पेटीकोट, ब्लाउज पहनती हैं।

6. भोजन :-

उरांव जनजाति का मुख्य भोजन चावल, गोंदली, कोदो की भात व पेज है। इसके साथ उड़द, मूंग, कुलथी की दाल मौसमी सब्जी खाते हैं। मांसाहार में मुर्गा, मछली, बकरा, खरगोश, सुअर, हिरण आदि का मांस खाते हैं। त्यौहार व उत्सवों में चावल का शराब हड़िया बनाकर पीते हैं। पुरूष बीड़ी पीते हैं।

7. आर्थिक जीवन :-

उरांव जनजाति उपजातियों का मुख्य आर्थिक स्त्रोत कृषि, मजदूरी, वनोपज संग्रह आदि है। कृषि में पहाड़ी ढलान पर कोदो, गोंदली, साठीधान, उड़द, मूंग, कुलथी अरहर आदि तथा नीची सेरहा भूमि में उन्नत धान बोते हैं। असिंचित भूमि में उत्पादन कम होता है। जिसके पास जमीन कम है वे अन्य कृषक के खेतो में मजदूरी करते हैं। जंगल से तेन्दुपत्ता, माहुल पत्ता, महुवा, गुल्ली, साल बीज, चार, चिरौंजी, कोसा, धवईफूल, शहद आदि एकत्र कर बेचते हैं। शिक्षित उरांव युवक–युवतियां शासकीय नौकरी करते हैं। वर्षा ऋतु में स्वयं के उपयोग हेतु मछली भी पकड़ते हैं।

8. सामाजिक संरचना :-

उरांव जनजाति उपजातियों में विभक्त है। इनके प्रमुख उपजातियॉ 1. उरांव, 2. धांगड़, 3. धनका आदि हैं। धर्म के आधार पर हिन्दु उरांव और ईसाई उरांव में विभक्त हैं, इसमें अनेक बहिर्विवाही गोत्र पाये जाते हैं। इसके प्रमुख गोत्र लकड़ा, तिग्गा, तिर्की, टोप्पो, मिंज, बेक, खल्को, कुजूर, खाखा, एक्का आदि हैं। प्रत्येक गोत्र के पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, वृक्ष, आदि के नाम का वंश चिन्ह (टोटम) पाये जाते है।

9. जीवन संस्कार :-

उरांव जनजाति की गर्भवती महिलाएं प्रसव के दिन तक अपनी सामान्य आर्थिक तथा पारिवारिक कार्य करती है। प्रसव घर पर ही ''सयानी'' (बुजुर्ग) स्त्रियों के देख–रेख में कराया जाता है। बच्चे का नाल घुरी को आग में तपाकर काटते हैं। जो प्रसूता को उनके माता–पिता द्वारा दी गई होती है। नाल को घर में ही गड़ाते हैं। प्रसव के बाद प्रसूता को पीपर, सोंठ, अजवाईन गुड घी नारियल आदि से निर्मित लड्डू खिलाते है छठे दिन छठी का आयोजन किया जाता है। आयोजन में रिश्तेदारों को हड़िया, बीड़ी आदि से स्वागत किया जाता है। प्रसूती तथा नवजात शिशु को नहलाकर नये वस्त्र पहनाते हैं। माता एवं नवजात शिशु सूर्य का प्रणाम कर मेहमानों का भी आर्शीवाद लेते है।

10. विवाह संस्कार :-

उरांव जनजाति के विवाह उम्र लड़को की 21 से 24 वर्ष तथा लड़कियों की 18 से 22 वर्ष उपयुक्त मानी जाती है। विवाह का प्रस्ताव लड़के वालों की ओर से लड़की वाले को दिया जाता है। वर पक्ष वधु के पिता को सुक भरना (वधु मूल्य) के रूप में शराब, बकरा, चावल, दाल साड़ी आदि देते है। नगद राशि का रिवाज नहीं है। विवाह की रस्म जाति के बुजूर्ग व्यक्तियों की देख–रेख में सम्पन्न होता है। ईसाई उरांव में शादी के पूर्व 3 से 7 दिन तक चर्च में शिक्षा दी जाती है। विवाह रस्म चर्च में सम्पन्न होती है। जनजाति रीति रिवाज से भी की जाती है। इसके अतिरिक्त सहपलायन, ढूकु (घुसपैठ) विनियम, घर जमाई प्रथा, विधवा–त्यगता का पुनर्विवाह को भी सामाजिक मान्यता है।

11. मृत्यु संस्कार :-

इस जनजाति में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर मृतक को दफनाते है। सम्पन्न हिन्दु उरांव (संसारी उरांव) जलाते भी है। मृत्यु के तीन दिनों बाद तीज नहावन हेतु रिश्तेदारों एवं सामाजिक बंधुओ को बुलाया जाता है। नदी नाले में सभी रिश्तेदार स्नान करते है। घर की साफ–सफाई की जाती है। इसी दिन से मृतक के घर परिवार को शुद्ध माना जाता है। तीन माह बाद गमी मनाया जाता है। जिसमें परिवार तथा गांव के लोगों को भोज दिया जाता है। ईसाई उरांव में मृत्यु के समय पादरी को बुलाया जाता है। वह ज्ञान का उपदेश देता है। पापों के प्रायश्चित कराया जाता है। तथा आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की जाती है। इसे अन्तमलन संस्कार कहते है।

12. जातीय पंचायत :-

उरांवों में परम्परागत जाति पंचायत होती है। ग्राम स्तरीय जाति पंचायत का प्रमुख महतो कहलाता है। ये पंचायते

जातिगत समस्या, वैवाहिक विवाद, अनैतिक संबंध, सम्पत्ति का बंटवारा आदि का निपटारा करती है। ग्राम के सरना पूजा, करमा पूजा आदि की भी व्यवस्था करती है। कई ग्राम के जाति पंचायत मिलकर**''पड़हा पंचायत''** बनाते है पड़हा पंचायत का प्रमुख परहा राजा कहलाता है। इसके अतिरिक्त दीवान, कोटवार,पनेरी, पनभरवा और मुकतवा आदि पदाधिकारी भी होते है। ग्राम स्तरीय जाति पंचायत में अनसुलझे मामले परहा पंचायत में निर्णय हेतु आते हैं जिनका परहा पंचायत में निपटारा किया जाता है।

13. धार्मिक जीवन :-

उरांव जनजाति के प्रमुख देव धर्मेश (सूर्य) है। ग्राम देवी–देवता में अंधेरी पाटा, चण्डी, गांव देवता, पाटराजा आदि है। इसके अतिरिक्त ये हिन्दु देवी–देवता राम, हनुमान कृष्ण, शिव आदि की पूजा करते हैं। साथ ही ये अपने वंश चिन्ह, नदी, पर्वत, नाग आदि को भी देवी–देवता मनाते है। गांव के सरना में ग्राम देवता का वास होता है। बुजूर्ग लोग भूत–प्रेत, जादू–टोना पर बहुत विश्वास करते है। मंत्र–तंत्र के जानकार व देवी–देवता का पुजारी ''पहान'' कहलाता है।

14. त्यौहार :-

इनका प्रमुख त्यौहार करमा पूजा, सरहुल, दशई, सोहराई, नवाखाई, फगवा, ढोल, खद्दी, आषाढ़ी (टुन्टा), जेठवारी आदि है। इन त्यौहारों में सुअर, बकरा, मुर्गा आदि का बलि अपने देवी–देवता में चढ़ाते है।

15. लोक नृत्य एवं गीत :-

उरांव जनजाति के प्रमुख नृत्य करमा नृत्य, सरहुल नृत्य, विवाह नृत्य आदि है। लोक गीतों में करमा गीत, सरहुल गीत, फागुन गीत, सोहराई गीत एवं भजन आदि है।

16. बोली-भाषा :-

इस जनजाति की अपनी विशेष बोली है जिसे ''कुडुख'' बोली कहा जाता है। इस जनजाति के लोग आपस में कुडुख बोली में बातें करते हैं।

–·–·–·–·–·–·

अध्याय - चार
उरांव जनजाति में करमा उत्सव

परिचय :-

आदिवासीयों के बीच एक बड़ा त्यौहार करमा है, जो मुख्यतः सरगुजा सम्भाग के सभी गांवो, शहरो में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्यौहार भादो मास के शुक्ल एकादशी को मनाते हैं। प्रकृति के उपासक उरांव (कुडूख) जाति का करमा एक प्रशिद्ध पर्व है शुरू में यह पर्व छोटा नागपुर के उरांव समाज में एक ही दिन भादो मास शुल्क एकादशी को होता था, इसलिए इसे राजा करमा भी कहते हैं। कालक्रम में जब किसी गांव में ठीक इसी अवसर पर किसी का निधन हो गया तो इस अवसर का पर्व नहीं फला, ऐसा विश्वास करके दुसरे अवसर पर इसे मनाने की प्रथा चली। इस प्रकार आज सारे सरगुजा सम्भाग में मुख्यतः छः अवसरों पर अलग–अलग नाम से करमा मानते हैं। लेकिन मनाने की विधि–विधान सब का एक है। छः करमा के नाम इस प्रकार है :–

- एकादशी या राजी करमा (सबसे पहले)
- अठई या आठे करमा
- तीजा करमा
- जिवितिया करमा
- दसई करमा
- सोहराई (कार्तिक) करमा (सबसे अंतिम में)

1. करम पर्व में प्राकृतिक दृश्य :-

अब करम पर्व का मौसम तथा धरती मॉ के रूप रंग को देखिएं। समय तो रहता है बरसात का लेकिन कोई–कोई करम इसके आखरी तक जाता है। जिधर देखिए उधर ही हरियाली। धरती माता अन्न–धन से भरी दिखती है। नदी–नाले, बांध–पोखर पूर्ण जवानी में आकर मस्ती में ऐठने लगती है। कभी पागल के सरीखे हंसते, कभी–कभी गीत में मस्त तो कभी बिलख–बिलख कर रोते–कलपते हैं। सभी प्राणी स्वास्थ्य खुशहाल दिखते हैं। सभी के घर के कोना कूची में थोड़ा–थोड़ा अन्न के ढेर लगे रहते हैं। अब करमा की तैयारी में लोग दो–अढ़ाई महीने से ही लग जाते हैं। कोई नये मांदर बनाने या खरीदने की चिंता करते हैं तो कोई पुराने मांदर की मरम्मत में। लड़कियॉ अपने श्रृंगार के लिए अपने मॉ–बाप को तंग करने लगती है और करमा की इंतजार बड़ी उत्सुकता से करती हैं। इन लोगो की तैयारी देख–देखकर धरती माता भी कांसी फूल

को बगुले के पंख जैसा संवार कर अपने श्रृंगार करती और मन ही मन मुस्कुराती हैं। जब बुढ़ी धरती माता इतनी खुश तो इसके गोद के लड़के–लड़कियॉ की खुशहाली का तो आप अंदाज कर सकते हैं। कभी–कभी करमा की इंतजार में हताश होकर लड़कियॉ अपने बड़े भाई तथा माता–पिता से पुछ बैठती है। इसका जवाब भी गीत से ही मिलता है जो निम्न प्रकार है –

''करम-करम करालगे बहिन,
कारम का दिन कैसे आवी रे।
करम का दिन कैसे आवी,
सावना भादो चढ़ियो गेल।
कुवारे करामा गाड़ाबी रे,
कुवारे करामा गाडा वी।''

करमा के अवसर पर खुशहाल तथा निरोग जिन्दगी के लिए लड़के–लडंकियॉ भगवान से प्रार्थना करती है। करम देवता का व्रत अधिकतर लड़कियॉ रखती हैं। लेकिन कुछ लड़के भी रखते हैं।

2. करम व्रत से लाभ :- श्रद्धा भक्ति के साथ व्रत रख कर करम देवता की उपासना से :–

1. आधी व्याधि सभी प्रकार की बीमारियँा का विमोचन होता है।
2. घर तथा ग्राम समाज के सभी परिवार में किसी भी प्रकार दैवी प्रकोप नहीं होता।
3. लक्ष्मी की वृद्धि होती है।
4. सभी प्रकार की विघ्न–बाधाएँ टल जाती हैं।
5. अच्छे फल की प्राप्ति होती है।
6. परिवार सूखी–सम्पन्न होता है।
7. बिगड़ी किस्मत सुधर जाती है।

3. व्रत के लिए सामग्रियाँ -



करम देवता के व्रत एवं पूजन में जावा, फूल, एक नया डलिया (बांस का बना एक पात्र) का नाचू, एक खीरा, चूड़ा तथा हल्दी रंगे कपड़े की आवश्यकता पड़ती है। फूल तो एकादशी के दिन करम काटने जाते समय लड़कियां अपने साथ डलिया लेकर उसमें चुन लेती हैं। अन्य सामान तो बाजार से माँ–बाप एकादशी के पूर्व प्रबंध कर देते है। लेकिन जाई (जवारा) तैयार करने के लिए व्रत रखने वाली लड़कियां भादो मास शुक्ल तृतीय को किसी स्थान से स्वच्छ बालू, जिसमें मिट्टी का अंश होता है, उसे किसी ऐसे घड़े का बर्तन में जिसका मुंह बंद किया जा सके। जावा (जव), मकई, मटर तथा कुरथी के बीज को लेकर बालू में मिलाती है और पानी छिड़क कर बर्तन के मुंह का बंद कर देती है। बीज उग आकर बालू की उपरी सतह में आ जाती है तो उस पर हल्दी पानी छिड़काव रोज करती है, जिससे पौधे के रंग पीले हो जाते हैं। यह क्रम एकादशी के सबेरे तक चलता है एकादशी के दिन दोपहर के बाद सभी युवक–युवतियां तथा बुजुर्ग मिलजूल कर मांदर, ढोल, नगाड़ा तथा घंट–झांझर के साथ करम काटने जाते हैं।



4. करम देवता का सुमिरण अर्चना तथा आमंत्रण :-

जिस करम पेड़ (गाछ) की डालियाँ परम्परा से लायी जाती है उस वृक्ष को करम देवता के निवास के रूप में विश्वास किया जाता है। करमा व्रत रखे व्यक्ति गाछ के पास जा कर करम देवता को निम्न प्रकार सुमिरण कर गाछ के धड़ को तीन चक्कर लगाकर सूत या नये कपड़े लपेटता है। उसे करम देवता का करम उत्सव के अवसर का नया पहनावा कहा जाता है। उसके बाद धड़ पर तीन बूंद तेल, सिंदुर देकर गाछ पर अक्षत चावल तीन बार छिटते हैं।





करम परघवनी गीत :-

ए करम देवता,
एम्हें चान मउर ता करम परव वरचा,
गुचय, एम्हें पद्य खंरत ला आलर तेलर भेक्खा अरा खेती
पानी ता हुरमी रोग बलायन हां अकं।
पद्या-खर्रा न, इम्दारी इम, वैसे हूँ मलद्ध खमके मंत आ।
आर कोड़े-कोड़े कोड़ेम कंच्चर पाड़नर नेकमन।
एम्हें विगड़ार कआ कपड़ेन उपजाया के।
एम्हे ओहरा वितीन मंनय अरा गुचय।

हिन्दी :- हे करम देवता, हम लोगों के साल भर का करमा त्यौहार आया। हम आपका अभिनंदन करते हैं, आप हमारे गांव के लोग लक्ष्मी, खेती–बारी के रोग बलाय, आफत–विपत दुख–तकलीफ को दूर करें। बाल बच्चों में किसी प्रकार तकलीफ आन न दें। वे हर्षोल्लास से नृत्य संगीत करें। हम लोगों के विनम्र निवेदन को स्वीकार करें और चलें।

5. करम देवता का प्रतिष्ठापन :-



जिस स्थान पर करम देवता का प्रतिष्ठापन करना होता है, पूरब मुंह करके अंदाजन सवा फीट का गढ़ा खोदा जाता है और उसमें करम की तीनों डालियो को डाल कर मिट्टी से कस दिया जाता है। उसके बाद उस स्थान को गोबर–पानी से लीप कर अर्पण (सजावट की समान) से एक वृत्ताकार चित्र करके उसमें अड़ी–पड़ी दो व्यास बनाया जाता है उसके बगल में धुप धवन जलाया जाता है, करम देवता को नया वस्त्र पहनाया जाता है। उसके पश्चात माताऐं करम की डालियों पर स्वच्छ जल का आम पल्लव दिया जाता है उन सभी में तीन–तीन बूंद तेल सिंदुर देकर अक्षत–चावल तथा आम पल्लव (पत्ती) से जल अभिषिक्त किया जाता है। तत्पश्चात बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ दोनों हाथ जोड़कर निम्न प्रकार दंडवत करते हैं –

हे करम देवता, यह आदिकाल की तुम्हारी कही बातें है। हम लोग साल भर में आज करमा त्यौहार मना रहे हैं। तुमको दशों–बीसों ऊंगुलियां जोड़कर विनती कर रहे हैं। गांव गंजार के मनुष्य, पशु तथा खेती–बारी में किसी प्रकार के रोग बलाय, आफत विपत न आने देंगे। हम लोगों को किसी प्रकार की बिगड़ी किस्मत को बनवेंगे।



हे करम देवता, तुम्ही हम लागों की आँखे तथा मस्तिष्क हो, तुम्ही हम लोगों के सुख–दुःख बताने कहने तथा उससे उबारने वाले हो। तुम लोगों के साथ हर घड़ी रहना। जान–अनजाने में जो भी गलतियां हम लोगों से हो सभी को संभालेंगे।

6. उपासिकाओं द्वारा करम देवता का अभिनंदन :-

सभी उपासिकाएं करम कहानी प्रारम्भ के पूर्व अपने–अपने डलिया या नचूवे को पूजा की कपड़े में ढ़क लिए आती है, करम देवता को तीन परिक्रमा करके बैठ जाती है और अपने मनोवंछित फल प्राप्ति के लिए हाथ जोड़ कर से षाष्टांग याचना (प्रार्थना) करती है। कहानी समाप्ति पर षाष्टांग प्रमाण करती हैं।





7. लड़कियों के साज समान :-

लड़कियों के साज समान में नयी साड़ी (बड़ाईक या जुलाहा का बुना हुआ) धोती जो अनिवार्य समझी जाती थी, लेकिन अब तो कपास नहीं होने के कारण इसका स्थान मील या करघे के कपड़ा ने ले लिया है। इसके अतिरिक्त सामान्य रूप से पहने जाने वाले साड़ी, ब्लाउज, पेटी कोट आदि





8. पूजा के समान :-

पूजा के समान में एक सुन्दर खीरा, चूड़ा, सिन्दुर, हरदी, रंगा हुआ चिथड़ा (कपड़ा), अरवा चावल, अर्पण, जाई फूल एक नया डलिया या नाचुवा (टुकना) होते हैं। खीरा के अभाव में कुन्दरी फल भी व्यवहार में लाया जाता है। लड़कों के लिए पूजा का कोई समान नहीं चाहिए। इनके लिए नयी धोती पर्याप्त है। माँ–बाप इन सभी चीजों की व्यवस्था करमा त्यौहार के दो तीन दिन के पूर्व कर लेते हैं।

9. करमा त्यौहार :-



करमा त्यौहार भादो मास शुक्ल पक्ष एकादसी के दिन दो – पहर के बाद दो–तीन बजे सभी मिल–जुल कर करमा देवता को परघा कर लाते हैं। अखाड़े पर मांदर, नगाड़े, घंट, झांझ के साथ आ जुटते हैं। इसके बाद सभी एक साथ प्रस्थान करते हैं। लड़कियाँ अपनी आसपास के क्षेत्रो के झरिया, बगिया आदि से फूल तोड़ने के लिए डलिया



या नचुवा लेके जाती है। फूलो में सुगधिंत फूलो को चुनते हैं। करम देवता को जानने वाले उसी करम वृक्ष की डालियों को लाते हैं जिसे हर साल लाई जाती है। वहाँ पहुंचकर करम देवता को दोनों हाथ जोड़कर निम्न प्रकार सुमिरण मुख्य उपासक गांव का (बैगा/पाहन) करता है –

हे करम देवता हमलोग आज साल भर में करमा त्यौहार मना रहे हैं। हम लोग आपको (तुमको) श्रद्धा भक्ति के साथ नियम धरम के अनसुार गाजा–बाजा के साथ लेने आयें हैं। हम लोग की प्रार्थना है कि तुम मेरे गांव चलो।

इसके बाद मुख्य उपासक गाछ के धड़ पर तीन भंवर सूत या नये कपड़े लपेटता है यह करम देवता को नया वस्त्र (कपड़ा) पहनाने के नियम है तत्पश्चात वह तीन टीपा सिंदूर देता और अक्षत–चावल से गाछ को अभिषिक्त करता है। वहाँ जाने वाले के बाद उपवास रखा हुआ उपासक गाछ (पेंड) पर चढ़ता और तीन ऐसे डालियों को काटता जिनके अगले छोर किसी प्रकार से बर्बाद (खराब) नहीं होते। अब करम देवता को लेकर गाते–बजाते हुए सब लोग के पास आते हैं। इस समय का गाना निम्न प्रकार है :–

गुचय-गुचय करम देवता, पद्यनता दुःख दंदन हे आये,
निंगन निहोरा नंदम बाबा,
निंगन निहोरा नंदम।
चार भइर नू एम्हे करमा वरचा
जिया कयन कोड़े उड़ के बबा,
जिया कया कोड़े उड़ के।
जिया कया कोड़े रआ,
कोड़े कोड़म पाड़ोम बेचोम बबा,
कोड़े कोड़म पड़ोम वेचोम।

उधर लड़कियां भी फूल तोड़कर वापस आती हैं और भीड़ (जमात) में आ मिलती है। कोई–कोई लड़की भर डालियां फूल तोड़ नहीं पाती है अफसोस करती हुई निम्न प्रकार गाना गाती है :–

पूंप तोरवता झरिये-झरिये के रन,
नीदिम हाउड़ा।
ची बेटी पूंप बओर होले,
एन्देरन चिऔन
एन्देरन भला।

अर्थ :- (मैं फूल तोड़ने के लिए सारा झरिया छान डाली लेकिन भर डलिया तोड़ नहीं पाई, डलिया खाली ही रह गया। कोई व्यक्ति दे बेटी फूल कहेंगे तो मैं उन्हे क्या दूंगी।)

इसके बाद जमात (भीड़) गांव के आखाड़े के लिए प्रस्थान करते हैं। रास्ते में गाते, बजाते, खेलते और चंवर डुलाते आते हैं जब गांव पहुंचते हैं तब करम देवता को (बैगा / पाहन) के जिम्मे लगाते है। बैगा / पाहन बड़ी आदर–सत्कार के साथ धार्मिक रीति के अनुसार श्रद्धा भक्ति के साथ पूजा–अर्चना करके इसे जिम्मा लेता है, बैगा / पाहन उसकी रखवाली के लिए एक आदमी रखता है। इस समय बैगा / पाहन का स्वागत निम्न प्रकार का है :–

ई उबला करम देवता,
सोने-मोने झरियानू रचकी देवता,
सोने-मोने झरियानू रचकी,
इन्ना या नरचकी करम देवता,
चोरन धुकूरनुम ब- रचकी, देवता
विनियम धुकूरनुम - रचकी
बरय कोर अय करम रिफ रंग नय अय
चोरन धुमूननूम अड़सकी।
बरथ कोर अय करम, पघन ता दुख दंदन हो अय,
चोरन धुकूननुम अड़सकी करम,
विनियम धूकूननुम अड़सकी।

10. अर्थ :-

हे करम देवता इतने दिनों तक तुम बहुत सुन्दर झरिया के निकट वन पहाड़ो के बीच जहाँ दिन–रात झर–झर, कल–कल आवाज होती है, वहाँ रहता था आज तुम चॉवर और पंखा डुलाते (झालते) हुए आया। हे करम देवता आगे गांव में

प्रवेश करो, रीझ रंग, आनंद कराओ और ग्राम परिवार के सभी आपस, विपत दुःख–तकलीफ को हरण करो। आज तुम चांवर तथा पंखा डुलाते (झालते) हुए तुम प्रवेश करो।

करमा देवता को बैगा/पाहन के जिम्मे कर सभी अपने–अपने घर जाते हैं और उपवास व्रत को रोटी खा कर तोड़ते हैं। खाने–पीने के बाद अखाड़े पर ताल–मृदंग के साथ उतर पड़ते हैं और सारी रात नृत्य–संगीत चलता है। सम्पूर्ण गांव–परिवार आनंद विभोर रहते हैं। बैगा/पाहन बड़े सवेरे ब्रम्हा मुहूर्त में धार्मिक रीतिनुसार श्रद्धा भक्ति के साथ अखाड़े के बीच में करम की तीनों डालियों को प्रतिस्थापित करता है। गीत तथा नृत्य तो रात में चलते रहता है लेकिन गीत का राग तथा मांदर, नगाड़े, घंट तथा झांझ के ताल रात में चढ़ाव–उतराव के अनुसर बदलते रहते हैं। करम देवता के अखाड़ में प्रतिष्ठापन के कुछ घंटे बाद करम की कहानी कही जाती है। किसी–किसी गांव में करमा देवता का प्रतिष्ठापन आखाड़े या चौक चौराहे या पहान/पुजारी या गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति के आंगन में रात को ही होता है और किसी–किसी गावं में सवेरे दूसरे दिन नौ–दस बजे पूर्वाहन में और यही सबसे अच्छा रहता है क्योंकि उस समय सभी बाल–बच्चे शामिल हो पाते हैं। कहानी गांव का बैगा/पहान या जो कहानी जानता है वही व्यक्ति सुनाता है। कहानी सुनाने वाला को सभी उपासिकाएं अपने–अपने दोने से जांवा फूल के साथ चिउड़ा देती है।

11. करम की कहानी एवं किवदंतियां :-



किवदंतियों है कि जिस समय उरांव (कुडूख) लोगों का रोहतास गढ़ लुटा गया, दुश्मनों का प्रवेश उसमें हो चला तो उरांव (कुडूख) राजा–रानी अपने कुछ लोगों के साथ जमीन के अंदर के गुप्त रास्ते से निकल भागे और कोयल नदी के उद्गम की ओर बढ़कर प्राण रक्षा के लिए दक्षिण में छोटानागपुर के घनघोर जंगल तथा उबड़–खाबड़ जमीन में आ छिपे। यहाँ उन्होने एक झरिया (झील) के किनारे एक बहुत बड़ा करम पेड़ (गाछ) के नीचे अपना पड़ाव डाला। पेड़

(गाछ) बहुत पुराना था जिसमें कई खंडहर (डालियाँ) थे जिसमें समय पर छिपा जा सकता था। इन लोगों की जीविका के साधन उस समय कंदमूल, फल–फूल थे। ये झरिया (झील) के स्वच्छ जल को पीते, उसमें नहाते–धोते प्रतिदिन सबेरे झरना के निर्मल जल को करम पेड़ (गाछ) के जड़ पर डाल कर फूल–फल चढ़ा कर पूजा–पाठ करते थे। इसी करम पेड़ (गाछ) के नीचे करम देवता के शरण में खाते–पीते सोते और आनंद से जीवन यापन करते थे। दुश्मनों ने इन लोगों का पीछा भी किया था। ऐसी दंत कथा है लेकिन दुर्गम घनघोर जंगल पहाड़ में प्रवेश करके खोजना कापी कठिन था। महीनों बीत गए अब इन्हें शत्रु का भय नहीं रहा। अब यें जीविकोपार्जन के लिए यहां से दूसरी जगह जा कर काम धंधे के बारे में सोचने लगे। भादो शुक्ल पक्ष लग चुका था। अब इसी शुक्ल पक्ष की एकादशी को विदाई समारोह मनाने के लिए शुभतिथि निश्चित किया गया। इस दिन ये अपने धार्मिक रीतिनुसार उपवास व्रत रखे। करम देवता को श्रद्धा भक्ति के साथ पूजा अर्चना की और इस खुशी में खूब खाए पीये और रीझ–रंग (नाच–गान) किए। इन लोगों के नृत्य संगीत को देख–सुन कर करम पेड़ (गाछ) की डालियाँ भी मस्ती में हिलारे मारती थी। एकादशी के दिन से दूसरे दिन तक मस्त और आरंद विभोर रहे, तीसरे दिन जब विदा होने के समय आया तो करम पेड़ (गाछ) को सभी अरजी, विनती करने लगे, हे करम देवता आप हम लोगों को सब प्रकार से शरण दिये, उसके बदले में हम लोग आपकी क्या सेवा करेंगे ? हमलोग आपसे शुभाशीर्वाद पाना चाहते हैं। करम देवता को विदाई शब्द सुनकर अफसोस तो अवश्य किये लेकिन जीविका का प्रश्न था। आखिर में करम ने कहा अच्छा तुम लोग आनंद से जाओ, रास्ते में कई प्रकार आफत आएगी, लेकिन तुम लोग एक बात को याद करना कि हर साल इसी भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को उपवास व्रत रखकर करम गाछ (पेड़) की तीन बिना नुक्स की डालियों को नियम धर्मानुसार काट कर लाना और श्रद्धा भक्ति के साथ पूजा–पाठ करके खूब उत्सव मनाना। हम भी तुम लोगों के करम उत्सव को देखने आवेंगे। अब करम देवता को सभी प्रमाण करके वहाँ से विदा हो गये।

अब राजा–रानी अपने दल के कुछ लोगों को अपने साथ रखकर शेष सभी को कमाने–खाने के लिए जहाँ–तहाँ भेज दिया और हर साल भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को उपवास व्रत रख कर करमा मनाने का आदेश दे दिए। यही नियम सारे छोटानागपुर राज्य में रहा, इसलिए राजी–करमा कहते हैं लेकिन कालक्रम में कई गांवों में करम मनाने की तिथि और अवसर में बदलाहट आ गई है।

12. करम देवता का तिस्कार करने के संबंध में कुछ अदृभूत कहानी है :-

ऐसे तो सरगुजा संभाग के अलग–अलग क्षेत्रो में अलग–अलग प्रकार की करमा लोक कथाऐं कहे व सुनाये जाते हैं।

1. सरगुजा जिले के उरांव जनजाति में करमा उत्सव के समय सुनाये जाने वाले कहानी :-

एक ग्राम में एक बड़ा धनी व्यक्ति रहता था उसके 7 पुत्र थे सभी का विवाह हो गया था सब परिवार आनंद पूर्वक रहते थे। क्वार एकादशी के दिन परिवार का मुखिया अपने बेटों को पैसा देकर नया कपड़े व आवश्यक सामान खरीद लाने के लिए कहा। सातों भाई खरीददारी करने के लिए निकल गए। सभी आवश्यक वस्तुएं नये कपड़े, वस्तुए आदि खरीद कर वापस आ रहे थे। बीच में नदी पड़ती थी। नदी बरसात होने के कारण उफान में बह रहा था। सभी भाई छाता गड़ाकर वही डेरा डाल दिए। कुछ दिनों बाद भी नदी का पानी कम नहीं हुआ तो बड़ा भाई बोला, हम में से कोई एक जाकर घर सूचना दे दें कि हम लोग यहां पर आ गए है। सबसे छोटा भाई बोला कि मैं जाता हूं ऐसा कहकर वह उफनती नदी में तैर कर पार हो गया। उस

दिन भाद्रपद शुक्ल पक्ष का एकादशी तिथि था। आगे बढ़ने पर उसे मांदर तथा नाच गाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह उसी दिशा में चला गया। वहां जाकर देखा कि करम का डाल लहरा–लहराकर झुम रहा है तथा युवक–युवतियां हड़िया पीकर नाच गा रहे है। वह युवक भी हड़िया पी कर उनके साथ शामिल हो गया व नाचने लगा तथा घर जाने की बात भूल गया। कुछ दिनों बाद छोटा भाई वापस नहीं आया तब बड़े भाई एक–एक कर सभी भाई को भेजा कोई भी वापस नहीं आया। तब बड़ा भाई स्वयं नदी पार कर जाने लगा तब उसे भी वहीं मांदर की आवाज व नाच गाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह भी उसी ओर चला गया। वहां जाकर देखा कि करम का डाल लहलहा रहा है तथा सभी वहां मांदर बजाकर नाच रहे है। उनके सभी भाई भी हड़िया के नशे में नाच रहे है।

करम देवता के तिरस्कार का फल :- सभी भाईयों को नाचते देखकर बड़े भाई को गुस्सा आया वह तलवार/कुल्हाड़ी निकाला व करमडार को काट डाला। करम डार के कहते ही सभी लोग वहां पत्थर की बूत में परिवर्तित हो गये जो जैसा था वैसा ही पत्थर बन गया। बड़ा भाई वापस घर गया वहां देखा कि पूरा परिवार घर, पशु आदि पत्थर के रूप परिवर्तित हो गया है। वह अपने करम (किस्मत) को कोसता हुआ हाय करम–हाय करम कहते हुए रोता चला जा रहा था। रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिली उसने पुछा कि हाय करम हाय करम क्यों कर रहे हो तब वह सभी बात बुढ़िया को बताता है बुढ़िया कहती है कि करम की विनती करो तो सब कुछ ठीक हो जाएगा बुढ़िया ने कहा कि सात समुद्र के पार करम राजा रहता है। उसके पास जाकर विनती करो तो सब कुछ ठीक हो जाएगा तो उसने बुढ़िया से पुछा कि मैं सात समुद्र कैसे पार कर पाउंगा। तब बुढ़िया ने उसे तुम्बा (लौकी) का बीज दिया और कहा कि जब तुम सागर के पास पहुचोंगे तब यह बीज किनारे बो देना। यह बड़ा होता जाएगा तथा इसकी लता बढ़ती हुई करम राजा के पास पहुंच जाएगा। तुम फल को तोड़ लेना और गुदा निकालकर नाव बनाकर करम राजा के पास पहुंच जाओगे। सुबह बड़ा भाई सागर की तरफ प्रस्थान किया। रास्ते में वह हाय



करम हाय करम कहते जा रहा था। जंगल में उसे जाते जाते रास्तें में एक महिला मिली उसके सिर में जटा तथा अन्य अंग में छोटे–छोटे घांस उग रहे थे जिसका भार वह नहीं उठा पा रही थी उसने बड़े भाई से पूछी कि तू क्यों रो रहा है तथा कहा जा रहे हो। भाई ने सब कथा सुनाई तथा कहा कि वह करम राजा के पास जा रहा है ताकि वह इन समस्याओं से छुटकारा मिल जाए। वह महिला बोली कि मेरी समस्या भी करम राजा के पास रखना तथा पूछना की मेरी समस्या का समाधान है कि नहीं। हां कह कर आगे बढ़ा रास्ते में फिर एक महिला मिली, उसके कुल्हा में ''पीढ़ा'' (बैठने के लिए बनाया गया लकड़ी का पाटा) चिपक गया था जिसके कारण वह परेशान रहती थी। उस महिला ने भी उससे पूछी की वह रोते–रोते कहां जा रहा है तब उसे भी वहीं कहानी बताया कि कैसे उसके भाई और धन सम्पदा पत्थर का हो गया है अतः वह समस्या समाधान हेतु करम राजा के पास जा रहा है। महिला हाथ जोड़ कर बोली कि बेटा करम राजा से यह भी पूछना की मेरे कुल्हा में पीढ़ी क्यों चिपक गया है। यह कैसे छूटेगा। आगे जाने पर उसे एक चरवाहा मिला उसने भी पूछा तुम हाय करम–हाय करम क्यों कर रहे हो तब उसे भी कारण बताया तथा बताया कि वह करम राजा के पास जा रहा है। तब चरवाहा ने कहा कि मेरी भी समस्या है कि मेरा कच्छा बढ़ता ही जा रहा है यह कम होगा कि नहीं हां कह कर वह फिर आगे बढ़ा।

करम देवता का दर्शन :- वह चलते–चलते सागर के पास पहुंचा विशाल सागर को देखकर वह डर गया। साहस कर बुढ़िया के बताये अनुसार वहां बीज का रोपण कर दिया। बीज का लता बढ़ते समुद्र में बढ़ने लगा। वह व्यक्ति लता के सहारे तैरता–तैरता समुद्र के पास पहुंच गया। वह लता बीच समुद्र में करमडार में लहलहा रहा था उसमें जा कर लिपट गया। बड़ा भाई तैरते–तैरते वहां पहुंच कर देखा कि वहां करम राजा लहलहां रहा है तथा लोग नाच गा रहे है। वह भी करम डार के पास





पहुंचा तथा नाच गा कर करम डार (भगवान) की पूजा करने लगा बहुत प्रार्थना करने पर करम राजा प्रसन्न हुआ तथा कहा कि जाओ तुम्हारा कसूर माफ हो गया लेकिन आगे साल भादो मास शुक्ल पक्ष एकादशी को करम पेड़ (गाछ) की तीन डालियों को श्रद्वा भक्ति से के साथ पूजा अराधना करना और खूब उत्सव मनाना इस उत्सव में अपने बहनो, परिचितो, रिश्तेदारो को भी बुलाना। बड़े भाई ने ऐसा ही करूंगा कहा। करम देव पानी देते हुए कहा की इसे जाओ उसे सब पर छिड़क देना तुम्हारा परिवार जन ठीक हो जाएगा। भाई ने दोनों महिलाओं व चरवाहा की समस्या के बारे बताया तथा उसका निदान पूछा। करमदेव ने बताया कि पहली महिला अपने ससुर, भसुर (पति के बढ़े भाई) और बहिन दामाद के समक्ष सिर को साड़ी से नहीं ढंकती (खुला रखती) है। उनका सम्मान नहीं करती है उसी प्रकार दुसरी महिला भी किसी बड़े बुजूर्ग का आदर नहीं करती है ससुर व बड़े बुजुर्गो के सामने पीढ़ा आदि में बैठ जाती है। इसलिए उसे ऐसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। यदि वे इससे छुटकारा चाहते है तो यह पानी छिड़क देना तथा कहना कि वे बुजूर्गो का सम्मान करें तथा बड़ों के सामने पीढ़ा पर नहीं बैठे। तब भाई ने चरवाहा की समस्याएं रखी तब उसका भी निदान करम देव ने बता दिया।

बड़ा भाई सबकी समस्याओं का समाधान लेकर वापस आया। रास्ते में उसे वहीं चरवाहा मिला उसने कहा कि तुम अपना लगोंट दीमक के बिल में डालकर ढक दो फिर यह नहीं उग पाएगा। चरवाहा ने लंगोट दीमक के बिल में डाल कर ढक दिया लंगोट बढ़ती थी उसे दीमक खा–खाकर नष्ट कर देता था। उस प्रकार चरवाहा की समस्या का अंत हो गया। फिर आगे जाकर वहीं महिला मिली जिसके कुल्हा में पीढ़ा चिपका था। उसके पास जाकर कहा कि तुम अपने बुजुर्गो का सम्मान



नहीं करती थी। इसलिए तुमको इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। तुम वादा करो कि आगे बुजुर्गों का सम्मान करोगी व उनके सामने पीढ़े पर नहीं बैठोगी। महिला के वादा करने पर उसके उपर करमदेव का जल छिड़क दिया। पीढ़ा अपने आप उसके कुल्हे से गिर गया। उसके बाद वह महिला मिली जिसके सिर पर जटा एवं घास उग रहा था। उसको बताया कि वह अपने ससुर एवं भसुर का सम्मान करे उनके समक्ष अपने सिर को पल्लु से ढ़ंक कर रखे महिला के वादा करने पर उसके उपर जल छिड़क दिया। जल की बुंदे पड़ते ही उसके सिर से जटा व घास अपने आप गिर गया। इस प्रकार उस महिला की समस्या का भी समाधान हो गया।

अब बड़े भाई अपने घर पहुचा तथा सभी पर पानी का छिड़काव किया उसका सभी कुटुम्ब भाई, माता–पिता, पशुधन अनाज सब पहले जैसा ही हो गया। इस प्रकार करम देव की पूजा के कारण वह फिर से खुशहाल जीवन जीने लगा। दुसरे साल भादो शुल्क एकादशी को सातो भाई तथा गांव वाले साथ मिलकर उपवास व्रत किये। करम पेड़ के तीन डालियों के धार्मिक नियमानुसार काट कर श्रद्धा भक्ति के साथ करमा देवता को सुमिरन करके गांव घर लाये उसका प्रतिष्ठापन किये भक्ति पूर्वक पूजा आराधना किये और खुब उत्सव बनाये यही परम्परा आज भी चला आ रहा है। काल खण्ड में मानने के दिन तथा अवसर में भी हेर फेर आ गया है। कहानी के पश्चात करम देवता को सभी अक्षद, चावल तथा फूल अर्पित करते है। उसके बाद तो गीत नृत्य मांदर झांझ की आवाज से अखाड़ा, चौक–चौराहा गुंज उठता है।

2. करम देवता का तिरस्कार करने के संबंध में बलरामपुर एवं जशपुर जिले के उरांव जनजाति में करमा उत्सव के समय कहे या सुनाये जाने वाले कहानीं :–

एक गांव था उसमें दो बुढ़ा–बुढी रहते थे। उनके नौ संतान थे। सात लड़के तथा दो लड़कियाँ। लड़को के नाम :–

(1) करमा (2) धरमा (3) धनवार (4) रीझा (5) मंगरा (6) भंवरा (7) लिटा

लड़कियों के नाम :– (1) गंगी (2) जोनी, दोनों जुडवा थी।

करमा कुछ चिड़चिड़ा तथा घमंडी स्वभाव का था। धरमा बड़ा धार्मिक स्वभाव वाला था और शेष सभी भाई अच्छे स्वभाव–विचार के थे। दोनों बहने लिटा से भी छोटी थी। जैसे ये जुड़वा भी वैसे ही दोनों के काम–धंधे एक ही साथ चलते थी। वे एक–दूसरे से कभी विलग (अलग) नहीं रहती थी। कालक्रम में सभी जवान सियान हो गये, शादी–ब्याह भी हो गया, केवल बहिनों का विवाह बचा था। कुछ दिनों के बाद बूढ़ा इस संसार से सदा के लिए चल बसा। बूढ़ा के गुजरने के बाद घर–परिवार का सारा बोझ करमा के माथे आ गिरा।



अब करमा को भारी चिंता हो गई। अब करमा, धरमा, धनवा तथा रीझा के साथ चारों भाई सूखा मौसम में काम की भीड़ नहीं रहने के कारण परदेश कमाने जाने और धान बुनाई के समय जेठ माह तक वापस आ जाने की सोचे। सभी भाई–बहनों से भी आपसे में विचार किये। अंत में बूढ़िया माँ से भी सलाह विचार लिए। माँ ने कहा सभी भाई–बहिनों से सलाह–विचार ले लो बेटा, इतने बड़े परिवार की जीविका के लिए और काम धंधा करना ही है। करमा ने कहा हम सभी से विचार ले लिए हैं माँ। हम धरमा, धनवा और रीझा चारों भाई जायेंगे, शेष भाई–बहन तुम्हारी सेवा के लिए रहेंगे। छोटे भाई लोग भी अब काम करने के लिए लायक हो गए। बूढ़ी माँ उन लोगों को और कुछ न कर आर्शीवाद दी, जाओ बेटे तुम लोगों की यात्रा मंलगमय हो और काम सफल हो अच्छा से कमाओगे, लेकिन रास्ता में खाने के लिए भात, लड्डू और मछली की तरकारी आदि ले जाना।

अब करमा, धरमा, धनवा तथा रीझा चारों भाई व्यापार के लिए कुछ पूंजी (धन) पकड़ कर घर से सबेरे निकल पड़े। साथ में समान लादने के लिए दोलदान बैल को लिया। बड़े सबेरे निकले, चलते–चलते कल तक में बहुत दूर निकल गये। अब पेट में चुहा दौड़ने लगा। ठीक रास्ते में एक नदी मिली, उसी के एक किनारे आम का एक बहुत बड़ा वृक्ष था। अब ये उसी पेड़ की छाया में खाने–पीने तथा आराम करने को सोचे। अब चारों भाई उसी नदी में दतुवन तथा स्नान किये। बैलों को यहीं नहलाये–धोये और दाना भूसी दिए। अब चारों भाई घर से लाये हुए, पीठा, लड्डू, मछली की तरकारी तथा भात प्रेम के साथ खाए। कुछ देर आराम करके फिर चलना शुरू कर दिये। एक गांव मिला ये उसी गांव में रात ठहरने को सोचे। उस गांव में एक बुढ़िया विधवा थी, जिसके यहाँ ठहरने के लिए पर्याप्त जगह था। उसी के यहाँ ठहरने के लिए स्थान मिल गया। बूढ़ी सुखी सम्पन्न तथा बड़ी दयालु थी। उसी के यहाँ ठहरने के लिए स्थान मिल गया। बुढ़ी सूखी सम्पन्न बड़ी होशियार और व्यवहार कुशल थी। बातचीत के सिलसिले में उन लोगों ने बुढ़िया से निकटवर्ती बाजार–हाट तथा यहाँ चीज को सस्ती पाते, खरीद लेते और कुछ मुनाफे पर उसी बाजार में बेच देते, नहीं तो दूसरे बाजार ले जाते। अब उन लोगों को रोज बाजार में यहीं काम रहा। उस पेशे में इन लोगों की किस्मत ने खुब साथ दिया। कुछ दिनों में लोगों की भाग चमक गयी। दो लदना बैल के स्थान में अब पाँच लदना बैल हो गए, जिस पर भी उन लागों को माल संभल नहीं रहा था। अब ये व्यापार करते–करते इतने दूर निकल गए कि उन लोगों को घर परिवार का कोई समाचार नहीं मिलने लगा। व्यापार में इतना व्यस्त हो गए कि घर के काम–धंधे का भी स्मरण उन्हें नहीं हो पाता और जब उन्हे बूढ़ी माँ तथा बाल–बच्चों की याद आती तो चिंता से झुलस





जाते थे। वर्ष गिर गई, घर वापस आने का जेठ माह कहके निकले थे। भादो का माह आ गया। दिन–रात घनघोर बारिस हो चली। इन लोगों का व्यापार भी कुछ मंद हो गया। चारों भाई अब विचार किए कि घर जाना चाहिए। माँ का दिल हम ही लोगों पर लगा रहता होगा। घर–परिवार भी हम लोगों को याद करते होंगे। यह विचार कर चारों भाई दूसरे दिन सब धन–दौलत को पांचो बैलों में लाद कर लदना घंटी रंगुड़–रंगुड़, डिंग–डिंग, ढंग–ढंग का आवाज कराते जंगल पहाड़, नदी, नाले पार करते चल पड़े। रास्ते में कई दिन लग गए। कहीं बाजार मिलता तो बाजार भी कर लेते। इस प्रकार उन लोगों को वापस आते–आते भादो शुक्ल पक्ष भी आ चुका था। किसी प्रकार ठीक भादो एकादशी को गांव–घर पहुंच गए। गांव प्रवेश करने के पूर्व गांव के पास के एक बगीचे में पड़ाव डाले। उन लोगों ने सोचा कि गांव–घर के सब परिवार आयेंगे और इज्जत के साथ स्वागत कर घर ले जाऐंगे। करमा अपने भाईयों के साथ गांव पहुंचने की खबर रिझवा से भेजा। रिझवा गांव–घर जाकर देखता है कि सारा गांव तथा घर–परिवार करम देवता की पूजा–पाठ में तल्लीन (मग्न) है। रिझवा भी माँ तथा भाई–बंधुओं से भेंट कर करम देवता की पूजा में श्रद्धा भक्ति के साथ–साथ लग गया। रिझवा का नाम जैसा वैसा रिझवार तथा रसिका भी था। रीझ–रंग में वह लग गया और व्यापार से सभी भाईयों के साथ लौट आने की खबर देना भूल गया। उसके आने की इंतजार में घंटो बीत गए। करमा मन ही मन कुढ़ने लगा। अब उसकी खोज–खबर करने के लिए धनवा को भेजा गया। धनवा की भी वही बात। उसके भी आने में बड़ी देर हो चली। अब करमा, धरमा का पारा धीरे–धीरे चढ़ने लगा। इस समय करमा घर में जल्द खबर करने के लिए धरमा को भेजा। धरमा तो और धार्मिक प्रवृति का था। वह घर आया, माँ तथा घर परिवार से स्नेह भेंट–मुलाकात करके वह भी बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ करम देवता की पूजा पाठ में लग गया और रीझ रंग में प्रवृत हो गया और खबर करना भूल गया। करमा आशा देखते ही रह गया। उसका नाक भी चढ़ गया। उसने गुस्सा को संभाल नहीं सका। वह आँखे लाल करते हुए घर आया और देखता है कि सारा परिवार करम देवता की पूजा और रीझ–रंग में तल्लीन (मग्न) है। करमा गुस्सा को रोक नहीं सका और करम के सभी डालियों को उखाड़–उखाड़ कर फेंक दिया और सीधे पड़ाव के पास चला गया। उधर करमा की करनी को देखकर सभी आहत हो गये और तरह–तरह का मन में सोचने लगे। करमा ने बड़ी गलती की, घर तथा गांव परिवार की आगे चले, क्या परिस्थिति होगी, तरह–तरह की चिंता करने लगे। करमा भी वापस होकर दंग रह गया। उसने देखा कि बोरा का सारा कमाया हुआ धन–दौलत, घास–पुआल हो गया। पांचों बैल पूर्ववत खड़े हैं। बैल की पीठ पर लादे सभी बोरे भी जैसे के तैसे हैं। अब करमा को भारी ग्लानी हो चली। अब करमा को भूख–प्यास सताने लगी। आखिर में गांव घर के लोग आए। वे भी यह देखकर ताज्जुब हो गये कि चारों भाई का कमाया धन सब मिट्टी में मिल गया। उसके बाद करमा एवं उसके घास–पुआल, लादे हुए बैलों को परघा (परीक्ष) कर ले आये।

करम देवता के तिरस्कार का फल :-



अब तो करमा, धरमा परिवार के लिए बड़ा खराब दिन आ गया। उन लोगों की हालात बिल्कुल दयनीय हो गई। इतने बड़े परिवार को चलाना आसान बात नहीं थी। मांगने से कोई गांव वाले दान भी न देते थे। वे दाना—दाना के लिए परेशान हो गये। अब करमा, धरमा के खराब दिन आने के कारण जानने के लिए एक भगत के पास शगुन देखने गये, उसने अपनी दैवीय शक्ति से सोच विचार कर स्पष्ट शब्दों में कहा देखो करमा तुमने करम देवता को उखाड़ कर फेंक दिया, उसकी बड़ी बेइज्जती हुई, करम देवता नाराज हो कर चले गये और उसके श्राप से तुम लोगों के सारे परिवार का कर्म—किस्मत बिगड़ गया है। जब तक करम देवता को खुश नहीं करोगे, तब तक तुम लोगों की बिगड़ी हालत नहीं सुधरेगी। अब करमा का दिमाग ठनक गया, वह तो अपने किए कुकर्म के लिए पश्चात करने लगा। अब दूसरे दिन बड़े सबेरे करम देवता की खोज में निकल पड़ा। चलते—चलते गांव से दूर निकल गया। रास्ते के किनारे एक बहुत बड़ा पीपल का वृक्ष मिला, जिसका एक अंग सूख गया था। करमा वहाँ पहुंच कर ठिठक गया। करमा को बड़ी चिंचित देखकर वृक्ष ने कहा तुम मुरझाये हुए चेहरे में कहाँ जा रहे हो भाई। करमा ने कहा, क्या कहें हमारा कर्म किस्मत खराब हो गया। हमसे करम देवता रूष्ट हो गये। हम उसी की खोज में निकले हैं उसके बाद पीपल वृक्ष ने फिर कहा, अच्छा भाई हमारे साथ भी तो एक बड़ी मुसीबत है, हमारा अंग सुख गया है, उसका कारण तथा निदान कृपया करम देवता से पुछ आना। करमा अच्छा कहा और आगे बढ़ा। अब करमा को भुख भी सताने लगी कुछ दूर आगे बढ़ने पर रास्ते के किनारे ही एक डूमर (गुलर) पेड़ (गाछ) मिला वह फलों से लदा था और कुछ पक कर लाल दिखते थे। करमा भूख से परेशान था। भूख क्या नहीं कराता। करमा किसी प्रकार वृक्ष पर चढ़ा और पके हुए फल को तोड़ा। लेकिन बड़ी अफसोस कि जैसे ही खाने के लिए फाड़ा तो अंदर पिल्लु (कीड़ा) भरा देखता है। करमा उसे फेंक दिया और दूसरे को तोड़ा, उसके अंदर भी पिल्लु (कीड़) बिलबिलाने लगा। अब करमा बड़ा आफत में पड़ गया। वह पेड़ से उतरकर फिर आगे बढ़ा। चलते—चलते उसे थवाकट भी महसूस हो रही थी कुछ दूर आगे बढ़कर एक सत्तु बेचने वाला मिला। करमा को भुख सहा नहीं जाने लगा। उसने सत्तु बेचने वाले से अपनी सारी कहानी कह सुनाई और खाने के लिए कुछ सत्तु मांगा। सत्तु वाला उसकी दयनीय परिस्थिति देखकर दे दिया। करमा उसे खाने के लिए पानी मिलाने आगे बढ़ा।

चलते–चलते वह एक ऐसे राजा के राज्य में जा पहुंचा जिसके राज्य में बारह वर्ष से पानी ठीक से नहीं पड़ रहा था। जनता अन्न पानी के बिना व्याकुल थी लोग प्यास से कलपने लेगे। जड़–चेतन सभी जीव धारियों को बड़ा कष्ट था। राजा की भेंट करमा से हो गई। राजा ने करमा से पुछा भाई तुम इतने चिंचित और व्यग्र कहाँ जा रहे हो, तुम्हारा नाम क्या है ? करमा ने बड़े कातर स्वर में जवाब दिया, हे राजन मैं दुखिया हूँ। मेरा नाम करमा है। मुझसे करम देवता नाराज हो गये हैं उनकी नाराजगी से मेरे कर्म किस्मत बिगड़ गये हैं। मैं पानी में बिना बेहाल हूँ। मैं करम देवता की खोज में निकल पड़ा हूँ। एक आदमी ने कहा जब तक करम देवता को खोज कर खुश नहीं करोगे तब तक तुम्हारा भाग्य नहीं बदलेगा। उसके बाद राजा ने कहा, भाई करमा मैं भी तो बेहाल हूँ। राज्य में बारह वर्षों से पानी नहीं पड़ा रहा है। अन्न पानी के बिना सभी त्राहि–त्राहि कर रहे हैं उसका निवारण करम देवता से पुछ आना। करमा अच्छा कहा और भुखे–प्यासे लहकते आगे बढ़ा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक अहीर से भेंट हुई। अहीर ने करमा से पुछा कहाँ जा रहे हो भाई, तुम इतना चिंचित और दुःखी दिखते हो। करमा सारा हाल कह सुनाया। अहीर को दया आ गई उसने करमा को पीने के लिए दूध दिया। करमा पीने के लिए जैसे ही उठाया कि सारा दूध में खून दिखता है। करमा और आफत में पड़ा और उसे भी छोड़–छाड़ कर भूखे प्यासे लहकते किसी प्रकार फिर आगे बढ़ा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक नदी मिली। नदी के किनारे बालू पर बड़े कछुवे को चित पड़ा हुआ देखा। कछुआ बरसो से पेट दर्द की बीमारी से परेशान थे उसने करमा को देखा, करवट बदला और पुछा भाई तुम कहाँ जा रहे हो, क्यों इतना व्याकूल लगते हो। करमा ने जवाब दिया क्या बताए करम देवता हमसे नाराज हो गये है, हमारी किस्मत बिगड़ गई है। हम अन्न–पानी के बिना बेहाल है हम करम देवता को खोजने चले हैं, लेकिन नदी को पार होकर कैसे आगे बढ़ेगें। कुछ क्षण कछुआ चुप रहा और बड़ी सोच समझ कर कहा, भाई हम भी तो एक बड़ी आफत में पड़े हैं। हम कई साल से पेट की बीमारी से बेचैन हैं। इस बीमारी का कारण और निराकरण भी करम देवता से पुछ आना। यदि मेरी बात सुनोगे तो मैं नदी पार कर दूंगा। करमा ने कहा अच्छा। अब कछुआ अपने पीठ में बैठाकर करमा को नदी पार करा दिया और उसी तट पर करमा के वापस आने की इंतजार में ठहर गया।

करमा को करम देवता का दर्शन :-

करमा नदी पार हो गया, कुछ ही दूर आगे विशाल करम पेड़ (गाछ) की छाया में, सिर का समूचा बाल सफेद, जटाधारी, मुंछ–दाढ़ी बगूला का पंख जैसा पेड़ के नीचे ध्यान मग्न बैठा एक बूढ़ा को देखा। चेहरे से बड़ा भयंकर लगता था। लेकिन करमा को विश्वास हो गया कि यही करम देवता हैं जो कदम पेड़ की छाया में ध्यान मन्न बैठे हैं। करमा डरते–कांपते बड़ी हिम्मत करके उसके पास किसी प्रकार पहुंच गया। बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ नतमस्तक हो प्रमाण किया और हाथ जोड़कर उनके सामने चुपचाप खड़ा हो गया। कुछ देरी में बूढ़ा सिर उठाया और आँख खोल कर करमा को एकटक देखने लगा और कहा बेटा तुम कौन हो, क्या खोजते हो ? करमा कांपते–लड़खड़ाते बड़ी गंभीर स्वर में जवाब दिया, बाबा मैं एक दोषी एवं दुखिया हूँ। मुझसे गुनाह हो गया बाबा, क्षमा कीजिए बाबा। कुछ क्षण बूढ़ा चुपचाप रहा और अपने दिव्य ज्ञान से करमा के लिए अनर्थ तथा उसका प्रतिफल भोगने को भी जान गया। बूढ़े को दया आ गई। करमा भी अपने किये कूकर्म का कुफल काफी भोग लिया था बूढ़ा ने करमा से कहा जाओ तुम्हारा कसूर माफ हो गया, लेकिन आगे साल भादो एकादशी को करम पेड़ (गाछ) की तीन डालियों को श्रद्धा भक्ति से धार्मिक नियमानुसार काट कर सम्मान पूर्वक अपना गांव घर लाना और



उपवास व्रत रखकर श्रद्धा भक्ति के साथ पूजा आराधना करना और खुब उत्सव मनाना। इस उत्वसों में अपनी बहनों को भी बुलाना। अब करमा की हिम्मत कुछ बढ़ी, उसने कहा, अच्छा बाबा। उसके बाद करमा पुनः करम देवता से पुछा, बाबा जब मैं आपकी खोज तथा दर्शन के लिए आ रहा था, उस समय रास्ते में पीपल पेड़, एक राजा तथा एक कछुएँ से भेंट हुई। ये सभी अपनी दुख तकलीफ के कारण तथा उनके निराकरण भी पुछ आने को कहा है, बाबा वे बहुत तकलीफ में हैं, बाबा। कछुआ कई साल से पेट दर्द से परेशान है राजा के राज्य मे बारह वर्ष बारिश नहीं हो रही और पीपल वृक्ष का अंग सुख गया है। उनके कारणों और निदानों को कह सुनाईये बाबा, नही तो मैं उनके प्रश्नों के क्या जवाब दूंगा। बूढ़ा कुछ देर मौन रहे और अपने दिव्य शक्ति से सभी के कारण और निवारण के उपाय एक–एक करके बतला दिए। कछुआ के प्रश्न का जवाब दिए कि उसके पेट में मणि है, जब तक उसे नहीं निकाला जायेगा उसके पेट का दर्द नहीं मिटेगा, राजा की एक कुंवारी लड़की जो बिल्कुल सयानी है जब तक उसकी शादी किसी से नहीं होती उसके राज्य में बारिश नहीं होगी, पीपल पेड़ की जड़ो के पास सात गगरा सोना पड़ा हुआ है। जब तक उसे नहीं निकाला जाएगा पेड़ हरा–भरा नहीं होगा। इतने बातें सुनकर करमा ने कहा, बाबा हमें आज्ञा दीजिए, बूढ़ा बाबा के यहाँ भूखा–प्यासा करमा, कंद–मूल, फल–फूल तथा पानी पीकर शुभार्शीवाद ले विदा हुआ।

थोड़ी दूर में नदी मिली उसी कछुआ से नदी पार हो गया और कछुआ ने अपने प्रश्न का जवाब पूछा। करमा ने काह, देखो तुम्हारे पेट में मणि है, वही पेट दर्द का करण है। जब तक नहीं निकालोगे तुम्हारा पेट दर्द नहीं मिटेगा। अब कछुआ ने कहा, भाई करमा, यह काम तो तुम से ही हो सकता है, मैं और किसको खोजूं अब करमा अपने कमर से एक तेज धार छुरी निकाला और कछुआ के पेट को फाड़ कर मणि निकाल दिया, कछुएँ का पेट दर्द छुमंतर जैसा भाग गया। करमा मणि लिए हुए आगे बढ़ा। चलते–चलते उसी अहीर से पुनः मुलाकात हो गई। करमा आज भी उससे दूध मांगा। अहीर ने उसे दूध दे दिया। करमा मन भर पिया, आज का दुध जैसा का तैसा था। अब उसमें ताजगी आ गई और तेज चाल से चलने लगा। चलते–चलते उसी राजा के राज्य में पहुंच गया। संयोग पुनः राजा से भेंट हो गई। राजा ने करमा से कहा, क्या हाल समाचार है भाई करमा। करमा ने कहा, जब तक तुम अपनी सयानी लड़की की शादी–विवाह नहीं करते हो, तुम्हारे राज्य में बारिश

नहीं होगी। यह सुनकर राजा बड़ा सोच में पड़ गये। इतनी जल्दी एक राज कन्या की शादी कैसे संभव होगी। कुछ देरी तक सोच तथा चिंता में पड़ गये। तत्पश्चात उसने कहा, करमा हम इतनी जल्दी राजकुमारी के लिए कहां वर खोजेंगे। चलो तुम्हारे साथ मेरी कन्या की शादी कर देते है। अब राजा की लड़की के साथ शादी, करमा क्यों इंकार करता। करमा की शादी राजकुमारी के साथ बड़ी धूम–धाम के साथ हो चला। इधर शादी का प्रारम्भ और रिमझिम पानी बरसना शुरू हो गया। सभी जड़ चेतन खुशहाली में मंगल गान करने लगे। यहा तक कि पेड़–पौधे भी हर्षोल्लास से हिलोरे लेने लगे। अब राजा हाथी–घोड़ा के साथ बहुत धन–दौलत के साथ दोनों को विदा किया। कुछ दूर इन्हे सत्तु वाला से पुनः भेंट हुई। करमा उनसे सत्तु मांगा। आज की सत्तु बिल्कुल ठीक, दोनों प्रेम के साथ खाये पिये और आगे बढ़े। चलते–चलते डूमर पेड़ (गाछ) के पास हाथी–घोड़ा और करमा गये। डूमर का फल मन के ललचाने जैसा पक कर लाल दिखता था। करमा को खाने की इच्छा भी हुई। उसके पके फल तोडवाया फाड़कर देखा वे बड़े रसदार थी और अंदर से सुगंध आ रहे थी। करमा खाने की इच्छा को रोक नहीं सका अब राजकुमारी के साथ दोनों प्रेम से एक ही फल को दो हिस्सा करके खा गए। करमा मन ही मन सोचने लगा वह करम देवता की कृपा और हमारी कर्म किस्मत। वह अब पुनः अपने दल–बल के साथ हाथी–घोड़ा में धन–दौलत लाद कर अपने गांव की ओर चला। चलते–चलते उसी पीपल वृक्ष के पास हाथी–घोड़ा और उसके आदमी रूक गए। करमा और राजकुमारी पालकी से उतर गए। करमा को पीपल पेड़ ने पुछा, कहो भाई करमा क्या समाचार है, मेरे सम्बन्ध में करम देवता ने क्या कहा। करमा करम देवता की बात को सुनाया कि तुम्हारी जड़ो के पास ही सात गगरा सोना है उनको जब तक नहीं निकलवाते हो तुम्हारा अंग हरा–भरा नहीं होगा। अब पीपल पेड़ बेचारे करे तो क्या ? वह आदमी पाएगा तो कहाँ, उसने करमा को ही कहा, देखो भाई करमा यह काम तो तुम से ही हो सकता हैं करमा अपने आदमियों से सोने के सातों गगरे को निकलवाया। पीपल वृक्ष ने कहा, इन सभी गगरे के सोने को तुम ही ले जाओ भाई करमा। वे हमारे दुश्मन हैं। अब करमा इन्हें अपने हाथी–घोड़े में लादकर घर की ओर बढ़ा। चलते–चलते दल–बल के साथ करमा अपने गांव के एक बगीचे में पहुंच गया और अपना पड़ाव डाल दिया और पहुंचने की खबर घर भिजवा दिया। अब करमा पहले का करमा नहीं रहा, वह जो करमा राजा हो गया। खबर पाते ही उनके घर, गांव, परिवार के लोग गाजा–बाजा के साथ स्वागत करने समाज के सभी लोग सस्नेह भेंट कर उससे बातचीत करने लगे। करमा पर करम देवता की खोज में क्या–क्या बीता, उसका कैसे दर्शन प्राप्त हुआ और क्या आदेश हुआ इत्यादि सारी बातों को लागों को सुनाने लगा। अब करमा की नव विवाहिता वधु के साथ भी घर परिवर के किसी व्यक्ति साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। वह शील स्वभाव तथा आचार–विचार में बड़ी अच्छी थी। काम धंधों में भी बड़ी निपुर्ण थी। सभी बहुएं एक माँ–बाप की बेटियों जैसे प्रेम के साथ रहती थी। करमा की बूढी माँ भी रहती थी। अब करमा–धरमा परिवार का भाग्य चमक उठा और इन लोगों की खुशहाल जिन्दगी वापस आ चली।

दूसरे साल भादो शुक्ल एकादशी को करमा सातों भाई, सभी बहुओं के साथ गांव परिवार के लोग उपवास व्रत किए। करमा पेड़ (गाछ) के तीन डालियों के धार्मिक नियमानुसार काटकर श्रद्धा भक्ति के साथ करम देवता को सुमिरण करके गांव घर लाये, उसका प्रतिष्ठापन किए, भक्तिपूर्वक पूजा आराधना किए और खुब उत्सव मनाये। उस शुभावसर पर बहिनो को आमंत्रित किए। उस साल का उत्सव और साल की अपेक्षा अधिक उल्लासपूर्ण रहा। यही परम्परा आज भी चला आ रहा है, कालक्रम में उत्सव मनाने के दिन तथा अवसर में हेर फेर आ गया। कहानी के पश्चात करम देवता को सभी अक्षत, चावल तथा फूल अर्पित करते हैं। उसके बाद तो गीत का तांता लग जाते और मांदर, नगाड़े, घंट, झांझर की आवाज से आखाड़ा



गूंज उठता है। उस संदर्भ अतीत काल में पाए गये, सातों भाई, सातों गोतनियों (बहुएँ) के गीत जो आज आखाड़े में आज भी रसरंग ला देती हैं –

''सातो, सातो भइया, सातो करम गाड़े
सातो गोतनी सेवा करे रे
भईया में मांदर टांगे, बहिन जे चावर बांधे
उडा पतांर भूइयां लोरे रे
डड़ा पतांर भूइयां लोरे रे।''

तीन–चार बजे उपरांत तक आखाड़े में खूब संगीत चलता है उसके बाद करम देवता को आखाड़े से धार्मिक रीत्यानुसार उखाड़ कर घर–घर जुलूस के सथ गाते–बजाते, घुमते और अंत में किसी झरिया, बांध या तालाब में विसर्जन कर देते हैं।

जूलूस का गाना :-

विडीम पुत्रा करम उविसयन
ची आयो प पा
ची आयो प पा
छेंवपपन मला मोखोन, गोड़गोड़ा मोखोन
ची आयो प पा
ची आयो प पा

(मैं दिन भर उपवास रही हूँ। हे माँ रोटी दो। मैं छिलका नहीं खाऊंगी। मैं छना हुआ खाऊंगी)

विसर्जन के समय का गाना :-

ई उल्ला करम गो
जोख पेल्लेन खरा रिझा बा चकी रे
जोख येल्लेन खरा रिझा बा चकी
अक्कूगा का करम
जोख पेल्लेन दुवारी न जकी
जोख पेल्लेन दुवारी न जकी

हिन्दी :- हे करम देवता इतने दिनों तक लड़कियों को खूब रीझ रंग कराया, अब तो हम युवक–युवतियों को अनाथ करके जा रहे हो।

13. करमा नृत्य :-

करमा उत्सव में करमा गीत एवं नृत्य करते है सरगुजा अंचल के उरांव जनजाति मुख्यतः एकादशी करमा (राजी करमा), अठई करमा, जीवितियां करमा, दशई करमा तथा सोहराई करमा में करमा नृत्य करते है। इसके अतिरिक्त अन्य लोग पर्वो में मनोरंजन के लिए भी करमा नृत्य करते है।

करमा नृत्य के उद्देश्य :–

करमा नृत्य निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

1. **एकादशी करमा नृत्य** :- नवा खाई के उपलक्ष्य में पुत्र की प्राप्ति, पुत्र के लिए मंगल कामना। नये फसल आने की खुशी में।
2. **अठई करमा नृत्य** :- क्वांर में भाई–बहन के प्रेम संबंध के लिए।
3. **दशई करमा नृत्य** :- युवक–युवतियों के प्रेम के लिए।
4. **सोहराई करमा** :- युवक–युवतियों के प्रेम के लिए।
5. **जीवितियां करमा** :- खुशहालियों के लिए।
6. **तीजा करमा** :- पति की दीर्घायु के लिए।



करमा नृत्य के शैली या प्रकार :-



उरांव जनजाति में यों तो करमा नृत्य करने की अनेक शैलियां है। लेकिन सरगुजा संभाग में मुख्यतः पांच शैलियां प्रचलित है।

1. **झुमर शैली** :- जो करमा नृत्य झुम–झुम कर नाचा जाता है, उसे झुमर शैली का करमा नृत्य कहते है।

2. **लंगड़ा शैली** :- एक पैर झुका कर गाया जाने वाला नृत्य लंगड़ा शैली करमा नृत्य कहलाता है।

3. **लहकी शैली** :- लहराते हुए करने वाले नृत्य को लहकी शैली करमा नृत्य करते है।

4. **ठाढ़ा शैली** :- खड़े होकर किये जाने वाले नृत्य को ठाढ़ा शैली करमा नृत्य करते है।



5. **खेमटा शैली** :- आगे पिछे पैर रखकर कमर लचका कर किये जाने वाले नृत्य खेमटा शैली करमा नृत्य कहलाता है।

करमा नृत्य नर्तक :- सरगुजा संभाग में उरांव जनजाति के महिला, पुरूष एवं बच्चे सभी नृत्य करते है।

समय :- सरगुजा अंचल में प्रायः करमा नृत्य वर्षा ऋतु को छोड़कर सभी ऋतुओं में नाचा जाता है। किन्तु विशेषकर एकादशी करमा, अठई करमा, जीवितियां करमा, तीजा करमा, दशई करमा, सोहराई करमा में ज्यादा उत्साह एवं उमंग के साथ नृत्य करते है।

वाद्ययंत्र एवं नृत्य में पहने जाने वाले वस्त्र :-



सरगुजा अंचल के करमा नृत्य में मुख्यतः मांदर और झांझ मंजीरा का वादन किया जाता है, इसके अतिरिक्त टिमरी ढोल, मोहरी आदि का भी उपयोग होता है। पुरूष करमा नर्तक दल सफेद रंग का कुर्ता, बंडी व धोती पहनते है, तथा अपने शरीर में कमर के उपर मयूर पंख झाल लपेटते है, तथा पगड़ी में मयूर पंख के कांड़ी का झालदार कलगी खोंसतें है। कलाई में चुड़ा और बांह में बहुटा पहनते है। महिला नर्तक दल सफेद रंग की साड़ी, ब्लाउज पहनते है, तथा कमर के उपर मयूर पंख की झाल लपेटते है, तथा सिर में मयूर पंख के कांड़ी का झालदार कलगी खोंसते है, तथा गले में रूपया माला, सुतिया, बांह में नाग मोरी या पहुंची तथा कमर में करधनी पहनते है। दोनों ही नर्तक दलों के पैरों में घुंगरू बंधा होता है। इसके अतिरिक्त सामान्य पहने जाने वाले वस्त्रों में भी करमा नृत्य करते है। बहुटा पहने हुए युवक की कलाईयों और कोहनियों का झूल नृत्य की लय में बड़ा सुन्दर लगता है। इस नृत्य में संगीत क्रमबद्ध होती है। राग के अनुरूप नृत्य शैलियों में बदलती है। मांदर और झांझ की लय ताल में नर्तक लचक–लचक कर भांवर लगाते, हिलते–डुलते, झुकते–उठते हुए वृत्ताकार नृत्य करते है।



–·–·–·–·–·–·–



संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेक्टर 24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website: cgtrti.gov.in, E-mail: trti.cg@nic.in

Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531